तर्ज-तुम दिल की धड़कन

रूह का दिल,दिल में पिया,रहते हैं रहते हैं
अपने दिल की बात पिया,दिल से दिल को कहते हैं
एक दिली है मेरे पिया की,होता वहीं जो चाहते हैं

1- रूह भी पिया की दिल भी पिया का,
तन भी पिया का कहते हैं
इश्क पिया के दिल से है,जो रूहों के दिल में है
इश्क ऱब्द करके पिया ने,अपना इश्क बताया है
खेल दिखाया इस कारण से महाकारण समझाया

2- दूजा तो कोई है ही नहीं,खुद से खुद की बात कही
अपना इश्क बढ़ाने को,आनंद अंग में उपजाई
हुकम इलम का खेल दिखाकर,जोश मेहर मैं समझाई
जब मैं आई मेरे पिया की,झूठी मैं को झूठलाई

3-मोमिन जिन को कहते हैं,वो चरणों में ही बैठे हैं
कहते हैं हम आए यहां और कहते कब जायें वहां
यहीं रूहों की फरामोशी है,और यहीं तो हांसी है
धाम अखण्ड में आवागमन,न हुआ है न होता है

Nijanand App